अध्याय–द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय
सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

शोध से सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पद है। किसी भी विषय क्षेत्र का साहित्य उस नीव के समाप्त होता है। जिस पर भविष्य की इमारत खडी होती है।

सतत् मानव प्रयासों से भूतकाल के एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसन्धान में मिलता है। अनुसंधान द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से प्रत्यक्ष या परोपक्ष रूप से सम्बन्धित समस्याओं पर कार्य से बिना जोड़े स्वतंत्र रूप से अनुसन्धान कार्य नही हो सकता किसी भी क्षेत्र मे वैज्ञानिक अनुसन्धान करने के लिए सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन का अनिवार्य एवं आवश्यक कदम होता है।

समस्या से सम्बन्धित कार्य का पुनरावलोकन अनुसन्धान आधार तथा गुणात्मक स्तर के निर्धारण का महत्वपूर्ण कारक है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसन्धान मे चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो साहित्य का पुनरावलोकन का अनिवार्य तथा प्रारंभिक चरण है।

2.1 साहित्य पुनरावलोकन के लाभ

1. पूर्व अनुसंन्धानों के अध्ययन से अन्य सम्बन्धित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
2. पूर्व अनुसन्धान के साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसन्धानकर्त्ता को अपने विधान की रचना के सम्बन्ध में अर्न्तदृष्टि प्राप्त हो सकती है।
3. सर्वेक्षण न करने से जो अनुसन्धान कार्य पहले अन्य अनुसन्धानकर्त्ताओं द्वारा अच्छी प्रकार से किया जा चूका है, वह पुनः किया जा सकता है।

4. ज्ञान के क्षेत्र मे विस्तार के लिए आवश्यक है कि, अनुसन्धानकर्त्ता को यह ज्ञान हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है, वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।

➢ पूर्व शोध कार्य का आकलन

पूर्व मे हुए शोध कार्य के आकलन मे शोध कार्य का अध्ययन दो भागो मे विभक्त किया गया है।

- भारत मे हुए शोध कार्य।
- विदेशो में हुए शोध कार्य।

➢ भारत मे हुए शोध कार्य

भारत मे हुए बालश्रमिकों से सम्बन्धित अध्ययन

बाल श्रमिकों से सम्बन्धित अध्ययन

बी. शिवा रेड्डी (1999) – ने भारत के शैक्षिक रूप से पिछड़े राज्य, आन्ध्रप्रदेश मे बालश्रम की समस्या और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के लिए उसके निहितार्थ की छानबीन कि कोशिश की अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार था। आन्ध्रप्रदेश समेत देश के अधिकांश राज्यों में साढ़े चार दशक की योजना के बाद भी प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण का लक्ष्य अभी पूरा नही हो सका है। राज्य में बालश्रम के भारी परिणाम को इसका मुख्य कारण बताया गया है। और कालक्रम मे इसमे मात्र नगण्य कमी आई है।

सुकेश कुमार (2000) – ने बालश्रमिक विघालयों मे अध्ययनरत बालश्रमिक . विघार्थियों के समायोजन का अध्ययन किया । अध्ययन का उद्देश्य विस्थापित बाल श्रमिक विघालयों मे अध्ययनरत बाल श्रमिकों के समायोजन के बारे मे जानकारी प्राप्त करना। अध्ययन का संकलन जनपद फिरोजाबाद के 30 बालश्रमिक विघालयों मे 6 विघालयों के 200 विघार्थी प्रतिदर्श हेतु चुने गये। इस अध्ययन के निष्कर्ष थे, परिणामों के

विश्लेषणोपरान्त यह पाया गया कि, समायोजन के दिनो आयामों मे से सामाजिक एवं शैक्षिक आयामों की दशा अति असंतोषजनक है। जबकि सांवेगिक आयाम कुछ कम असंतोषजनक है। अध्ययन में ग्रामीण एवं शहरी परिवेश का शैक्षिक एवं सांवेगिक आयाम पर तो प्रभाव पड़ा है, लेकिन समग्र समायोजन पर स्थानीयता का कोई प्रभाव नहीं है।

संतोष अरोरा (2002) – ने चूड़ी उद्योग से संलग्न बालश्रमिकों की पर्यावरण विषय में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया। अध्ययन का शोधसार इस प्रकार रहा। उद्देश्य फिरोजाबाद के चूड़ी उद्योग में कार्यरत बाल श्रमिकों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना। अध्ययन हेतु संकलन के लिए फिरोजाबाद के चूड़ी उद्योग में सलग्न–32 श्रमिक बालकों का चयन किया गया जो श्रमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् थे। शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक अध्ययन हेतु 32 ऐसे बालकों का चयन भी किया गया। जो सामान्य विद्यालयों में अध्ययनरत् थे तथा किसी प्रकार के श्रम में संलग्न नहीं थे। चयनित बालक कक्षा 3–5 के थे।

निष्कर्ष – प्राप्त परिणामों के आधार पर ये निष्कर्ष प्राप्त हुए कि पर्यावरण विषय की विभिन्न दक्षताओं में बालक श्रमिकों की उपलब्धि संतोषजनक है। अधिकतर बालाकों की उपलब्धि सामान्य से अति उत्तम की श्रेणी के मध्य पाई गई।

अनिल कुमार गुप्ता और सत्यप्रकाश पचौली (2005) परिपेक्ष्य में इन्होनें एक शोध टिप्पणी दी है।

''बाल श्रमिकों का शैक्षिक स्तर तथा उनके शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति'' उददेश्य – बाल श्रमिकों की समस्याओं का जानना शिक्षा से वंचित रहने के कारणों को जानकर उन्हें दूर करने का प्रयास करना। संकलन :– (सिंगरौली) में 120 श्रमिक शिक्षित विद्यार्थी 60 और अशिक्षित 60, 4 भाग करके 30 में लडके– लडकियों को लिया गया। निष्कर्ष :– बालश्रमिक वर्ग

के शिक्षित एवं अशिक्षित श्रमिक की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं हैं। और बालिका वर्ग में भी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

रेडी. आर..ए.बी (1972) - ने हायर सेकेण्डरी स्कूल में व्यावसायिक आवश्यकता तथा उनके व्यवसाय चुनाव से सम्बन्धित एक अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में परिवार की आर्थिक स्थिति तथा उनके द्वारा चुने गये व्यवसाय का सार्थक सम्बन्ध पाया गया इनका व्यावसायिक चुनाव उनके व्यावसायिक स्थिति से सम्बन्धित पाया गया चन्द्र एच. ने व्यावसायिक परिपक्वता का अध्ययन किया, इसके अंतर्गत शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र की कक्षा 8, 9 और 10 से 480 लडके और लडकियों को सम्मिलित किया गया। इनका अध्ययन करने पर पाया गया कि इन विद्यार्थियों की व्यावसायिक परिपक्वता और बुद्धिमत्ता में सार्थक सहसम्बंध है। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र और लिंग में व्यावसायिक परिपक्वता के लिए सार्थक अन्तर नहीं है।

जे.सी. सिन्हा ने (1978) - व्यावसायिक रूचि से सम्बन्धित एक अध्ययन किया जिसमें माध्यमिक शिक्षा के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि और परिवार एक इकाई के रूप में इसका सम्बन्ध देखा गया। तथा परिवार के वातावरण का बच्चों पर क्या प्रभाव पडता है, इसका निष्कर्ष किया गया था।

एस.एस. सिंह ने (1979) - शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के हायर सेकेण्डरी के बच्चों की व्यावसायिक अभिलाषा से सम्बन्धित मनोवैज्ञानिक और सामाजिक तथ्य पर आधारित एक अध्ययन किया। इसके अन्तर्गत दसवी कक्षा में छात्रों को चुना इस अध्ययन में पाया गया कि, इसमें व्यावसायिक अभिलाषा के अन्तर्गत अधिकांश विद्यार्थियों ने इंजीनियरिंग व्यवसाय को चुना है शेष विद्यार्थियों ने अन्य प्रकार के व्यवसाय चुने।

ओंकार डी.ए. (1981) - 10वीं क्लास के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिलाषाओं का बुद्धिमत्ता से सम्बन्ध और पालकों की शिक्षा और व्यवसाय

के बारे में यह अध्ययन किया था। इसके अंतर्गत तीन स्वतंत्र चर सम्मिलित किये गये है। व्यावसायिक अभिलाषा पिता की शिक्षा और पिता का व्यवसाय।

इस अध्ययन की मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार थे, जो विद्यार्थी ज्यादा बुद्धिमान है उन्हाने उच्च प्रकार का व्यवसाय चुना। विद्यार्थियों की बुद्धिमत्ता या सम्बन्ध उनके पिता की शिक्षा से था, जिनके पिता उच्च शिक्षा प्राप्त थे उनके बच्चे भी बुद्धिमान थे जिनके पिता का व्यवसाय उच्च था, उनके बच्चे बुद्धिमान थे तथा जिनका व्यवसाय निम्न वर्ग था उनके बच्चे भी कम बुद्धिमान थे।

डी.ई. सानुखिया (1984) – ने असमय राज्य में व्यावसायिक शिक्षा के उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम से सम्बन्धित अध्ययन किया कि अध्ययन के प्रमुख बिन्दु थे छात्रों की व्यावसायिक रूचियाँ उनके निवास स्थान के भौगोलिक स्थितियों पर निर्भर करती है एवं उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम में छात्रों की व्यावसायिक प्राथमिक उनकी योग्यता के अनुसार परिवर्तित होती हैं अतः इस अध्ययन के अनुसार किसी भी क्षेत्र में व्यावसायिक पाठ्यक्रम छात्रों की योग्यता रूचियों भावी आवश्यकताओं भौगोलिक परिस्थितियों तथा उस क्षेत्र में उपलब्ध कच्चे माल को ध्यान में रखते हुए निर्धारित किये जाना चाहिए।

मनगत डी (1988) :– ने अपने अध्ययन में व्यवसायिक परिपक्वता को बुद्धिमत्ता और सामाजिक आर्थिक शैक्षिक क्षेत्र के सन्दर्भ में देखा है। बुद्धिमत्ता एवं व्यावसायिक परिपक्वता के विभिन्न क्षेत्रों जैसे आत्म मूल्यांकन प्रासंगिक सूचनाओं, उद्देश्य निर्धारण तथा सम्पूर्ण परिपक्वता में सार्थक सह–सम्बन्धं है। सामाजिक, आर्थिक स्तर भी व्यावसायिक परिपक्वता के विभिन्न क्षेत्रों जैसे आत्म मूल्यांकन तथा समस्या समाधान से सार्थक सह–सम्बंध प्रदर्शित करता है।

शैक्षिक उपलब्धि व्यावसायिक सूचनाओं, योजनाओं, सम्पूर्ण परिपक्वता से सार्थक सम्बन्ध प्रदर्शित करती है। जबकि व्यावसायिक निष्कर्षण में सार्थ सम्बन्ध उपलब्ध नहीं हुआ।

पचौरी, लक्ष्मीकांत (1989) – इन्होने शहरी व ग्रामीण माध्यमिक शालाओं में कार्यानुभव विषय चयन की पृष्ठभूमि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया, इसके अन्तर्गत माध्यमिक कक्षा की छात्र छात्राओं को लिया गया। इस अध्ययन मे पाया गया, कि छात्र कार्यानुभव क्रिया कलापों का चयन जीवन में उपयोग व रूचि के आधार पर तथा कठिनाई एवं सरलता के आधार पर करते है।

➢ विदेश में हुए शोध कार्य

डायन्स चेक एवं डीन्ट (1956)– विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि एवं जीवन के प्रांरभिक वर्षो में अभिभावकों के साथ हुई अन्तः क्रिया के विभिन्न पक्षों के मध्य सह–सम्बन्ध ज्ञान किया साथ ही इस अध्ययन से यह निष्कर्ष भी निकाला कि व्यावसायिक रूचि एवं पालकों के बाहय दबावों के मध्य सह–सम्बन्ध नहीं है।

हॉलर और सेवेल (1957)– ने हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा एवं व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण तथा छात्र एवं छात्राओं के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया। इस शोध कार्य में उन्होनें निष्कर्ष पाया कि बालिकाओं की शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षा की उनके आवासीय क्षेत्र से कोई सम्बन्ध नहीं है। बालको की व्यावसायिक आकांक्षाओं की अपेक्षा शैक्षिक आकांक्षा आवासीय पृष्ठ भूमि से अधिक सम्बन्धित है।

बेन्टर और साथियों (1967) – ने विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन किया। इस शोधकार्य में उन्होनें उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा एवं व्यावसायिक योग्यता का अध्ययन

किया। प्रमुख निष्कर्ष थें, कि व्यावसायिक क्षमताओं और व्यावसायिक आकांक्षा के सह सम्बन्ध नहीं होता। उच्च वर्ग के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर तथा निम्न वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में कोई अन्तर नहीं होता।

पीटर (1971)- ने महिलाओं एवं पुरूषों के मध्य व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया। उन्होनें अपने अध्ययन में प्रमुख बिन्दु थे व्यावसायिक आकांक्षा में लिंग अपनी प्रभावी भूमिका अदा करता है। कुछ व्यवसाय ऐसे है, जिन्हें पुरूषों द्वारा चुना जाता है। जैसे शारीरिक क्रियाओं से सम्बन्धित व्यवसाय यांत्रिक वैज्ञानिक राजनैतिक एवं क्रय-विक्रय से सम्बन्धित व्यवसायों को प्राथमिकता देते है। कुछ व्यवसाय ऐसे है, जिन्हें माहिलायें, प्राथमिकता देती है, जैसे कला, संगीत, साहित्य लिपिक शिक्षक एवं सामाजिक कार्य से सम्बन्धित।

प्रेन्टर इस्ट (1972)- ने उच्च बुद्धिलब्धि एवं उच्च कक्षा स्तर तथा उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर एवं उच्च व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य सह-सम्बन्ध का अध्ययन किया तथा शोध कार्य के निष्कर्ष थे, उच्च बुद्धिलब्धि का उच्चकक्षा स्तर से तथा उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर का उच्च व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य सह- सम्बन्ध होता है।

➢ एम.एड.स्तर पर हुए शोध कार्य

वर्मा ललिता (1991)- ने विकलांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के मानसिक कार्य निष्पादन एवं व्यावसायिक इच्छा पर शोध कार्य किया। न्यादर्श के लिए भोपाल के 3 विद्यालयों के 50 सामान्य विद्यार्थी को चुना। मानसिक योग्यता परीक्षण डॉ. एस.एस. जलोटा तथ डॉ. जे.एस. ग्रेवाल की व्यावसायिक आकांक्षा मापनी का उपयोग किया। इस अध्ययन में सामान्य विद्यार्थियों के मानसिक कार्य निष्पादन में कोई सम्बन्ध नहीं होता, जबकि विकलांग विद्यार्थियों के कार्य निष्पादन एवं व्यावसायिक रूचि में सहसम्बन्ध होता है।

राजुरकर केवलराम (1993)– ने कक्षा 11वीं और 12 वीं के छात्र–छात्राओं की मानसिक योग्यता एवं व्यावसायिक रूचि का अध्ययन किया न्यादर्श में कला एंव विज्ञान संकाय के 200 छात्र–छात्राओं को चुना। मानसिक योग्यता परीक्षण के लिए डॉ. एस.एस. जलोरा के परीक्षण को उपयोग किया तथा व्यावसायिक रूचि मापन एस.पी. कुलश्रेष्ठ के प्रपत्र का उपयोग किया। यह अध्ययन के निष्कर्ष थे कि छात्र–छात्राओं की वाणिज्य सम्बंधी व्यावसायिक रूचि में कोई अन्तर नहीं है, दोनों संकाय के छात्र छात्राओं की व्यावसायिक रूचि और मानसिक योग्यता में ज्यादा अन्तर नहीं पाया गया।

शर्मा साधना (1993)– ने नगरीय एवं उपनगरीय क्षेत्रों में अध्ययनरत बालिकाओं की मानसिक योग्यता एवं व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। कुल न्यादर्श की संख्या 120 थी जिसमें नगरीय पाठशालाओं के कक्षा 9 से 12 कक्षा में अध्ययनरत 60 बालिकाओं तथा उपनगरीय क्षेत्र की 60 बालिकाओं को सम्मिलित किया। डॉ. एस. एस. जलोटा का मानसिक परीक्षण तथा एस.पी. कुलश्रेष्ठ का व्यावसायिक रूचि परीक्षण का उपयोग किया। इस अध्ययन में नगरीय एवं उपनगरीय छात्राओं की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर पाया। जबकि व्यावसायिक रूचि में सार्थक अन्तर नहीं पाया।